International Journal of Applied Research 2015; 1(2): 202-204

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(2): 202-204
www.allresearchjournal.com
Received: 14-11-2014
Accepted: 16-12-2014

मनोज कुमार पंडित
गम्हरिया, मरौना, निर्मली, सुपौल, बिहार, भारत

Corresponding Author:
मनोज कुमार पंडित
गम्हरिया, मरौना, निर्मली, सुपौल, बिहार, भारत

छोटानागपुर क्षेत्र का भौगोलिक परिदृश्य एक अध्ययन

मनोज कुमार पंडित

सारांश
झारखंड राज्य प्राकृतिक दृष्टि से दो मुख्य भागों में विभक्त है। छोटानागपुर और संथाल परगना। इसकी भौगोलिक स्थिति महत्त्वपूर्ण है। यह मध्य भारत के विशाल पठार पर पूर्वी भाग है। प्रकृति ने इसे भारत के अन्य प्रदेशों से बहुत कुछ पृथक कर दिया है। यह भाग पहाड़ों और जंगलों से भरा है। पहाड़ों में कितने ही सुन्दर झरने और जलप्रपात हैं। इसका उत्तरी और पूर्वी हिस्सा कम ऊँचाई प्रायः 600 मीटर है। हजारीबाग तथा गिरिडीह जिलों में बहुत–सी ऐसी पहाड़ियाँ हैं जो 600 से 1400 मीटर तक ऊँची हैं। यहाँ की पारसनाथ पहाड़ी झारखंड में सबसे ऊँची पहाड़ी मानी जाती है। जैन–धर्म से संबद्ध होने के कारण यह सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्ध है। यहाँ गर्म जल के अनेक झरने हैं। राँची जिला में सबसे पहाड़ की ऊँचाई 1200 मीटर है। इसी जिले में हुंडू–जलप्रपात झारखंड का सबसे बड़ा और प्रसिद्ध जलप्रपात है जो 100 मीटर की ऊँचाई से गिरता है।

प्रस्तावना
गंगा के मैदान और छोटानागपुर की जलवायु में काफी फर्क है। गर्मी के दिनों में गंगा के मैदान में बहुत गर्मी पड़ती है, किन्तु झारखंड के अधिकांश भागों में इस समय में साधारण गर्मी रहती है। हाँ, कभी–कभी अधिक से अधिक भी गर्मी पड़ती है। जाड़े के दिनों में गंगा के मैदान में साधारण जाड़ा पड़ता है, मगर झारखंड में काफी जाड़ा पड़ता है। यहाँ अक्सर रात में पाला पड़ा करता है और बाहर रखा हुआ पानी कभी–कभी जम–सा जाता है। झारखंड में साल में 1400 से 1500 मिलीमीटर तक वर्षा होती है किन्तु किसी–किसी साल 1700 मिलीमीटर भी वर्षा हो जाती है। राँची, जसीडीह, देवघर तथा इटकी आदि स्थान स्वास्थ्य के लिये लाभदायक समझे जाते हैं।
छोटानागपुर के पशु प्रायः कमजोर और कद के नाटे होते हैं। अतः यहाँ बैल के अलावा भैंसा भी काफी तादाद में हल में जोते जाते हैं। राँची जिले में आदिम जाति के लोग कभी–कभी गाय को भी हल में जोतते हैं। ये लोग, खासकर मुंडा जाति के लोग, दूध के लिये गाय प्रायः नहीं पालते। उनका कहना है कि दूध गाय के बच्चे के लिये छोड़ देना चाहिये। हजारीबाग और राँची के स्थानीय लोगों में भैंस पालने और उसकी नस्ल बढ़ाने की चाल नहीं है। यहाँ लोग भैंसा कम जोतते हैं पालतू जानवरों में हाथी, घोड़ा, बकरी, भेड़ गधा तथा सूअर आदि हैं। गड़ेरिये भेड़ पालकर कम्बल तैयार करते हैं। झारखंड पहाड़ी और जंगली भू–भाग है। यहाँ बाघ, चीते, भालू, भेड़िये, सूअर आदि काफी तादाद में पाये जाते हैं। हर साल पचासों आदमी और सैकड़ों पशु इनके शिकार होते हैं। जंगली हाथियों की संख्या अब अवश्य घट गई है।
आवास–प्रवासः छोटानागपुर एक पिछड़ा हुआ भू–भाग होने के कारण प्रवासियों का एक जबरदस्त अड्डा बन गया है और ये लोग यहाँ की जमीन, खान, यहाँ के उद्योग–धंधे, व्यापार और यहाँ की नौकरियों पर काफी दखल जमाये हुए हैं। यहाँ हजार में 14 आदमी ऐसे हैं जो गैर–झारखंडी तो हैं, पर जिनका जन्म यहीं हुआ है। ऐसे लोगों में बिहार, बंगाल तथा पंजाब से आये लोगों की संख्या अधिक है। ये लोग अधिकतर छोटी–छोटी नौकरियाँ अथवा व्यापार करते हैं। झारखंड में भारत के विभिन्न भागों से आये हुए लोगों में इन्हीं लोगों की तादाद सबसे ज्यादा है। घनी आबादी वाले क्षेत्रों के लिये झारखंड एक अच्छा उपनिवेश मिल गया है। बिहार तथा बंगाल में अंग्रेजी शिक्षा पहले और तेजी के साथ फैली। दूसरी ओर झारखंड पिछड़ी हुई अवस्था में रहा। इसलिये विभिन्न प्रवासी लोगों को यहाँ आकर यहाँ की जमीन, खान, उद्योग–धंधे तथा सरकारी और गैर–सरकारी नौकरियों पर कब्जा करने में बड़ी आसानी रही। ये लोग वर्षों से यहाँ आकर बहुत बड़ी संख्या में बसते चले जा रहे हैं। रोजी–रोजगार मिलने के अलावे उन्हें यहाँ अपने यहाँ की अपेक्षा अच्छी आवहवा भी मिल जाती है, इसलिये इस ओर आने का उनका आकर्षण और भी बढ़ गया है। औसत का हिसाब लगाने से मालूम पड़ता है कि यहाँ हर साल करीब 36 हजार प्रवासी बढ़ रहे हैं। सरकार के सभी नहीं तो अधिकांश विभागों में अधिकतर बड़ी–बड़ी नौकरियाँ इन्हीं लोगों के हाथ में हैं। बाहर के लोग तो झारखंड में आसानी से अपना पैर जमा लेते हैं, पर झारखंडियों को बाहर जगह मिलना मुश्किल

होता है। कुछ दिन तक भी स्थायी रूप से काम करने के लिये बाहर गये हुए यहाँ के लोगों की संख्या बहुत थोड़ी है। भारत से बाहर यहाँ के गये हुये थोड़े से लोगों में पढ़नेवाले और घूमने–फिरने वाले हैं। भूतपूर्व यूरोपीय उपनिवेशों में भी कुली आदि के काम के लिये यहाँ से बहुत थोड़े लोग गये हैं। फसल के समय कुछ कुली और व्यापारी बिहार, बंगाल, पंजाब, हरियाणा तथा आसाम जाते हैं। झारखंड के लोग बंगाल और आसाम के लोगों की अपेक्षा कुछ अधिक मजबूत होते हैं, इसलिये इन राज्यों में यहाँ के कुलियों की मांग रहती है। हर साल खास मौसम में थोड़े दिनों के लिये यहाँ के कुली बहुत बड़ी संख्या में वहाँ जाते हैं, लेकिन वहाँ जाकर वे विशेष कुछ कमा नहीं पाते, बल्कि बुरी आवहवा में स्वास्थ्य खोकर ही लौटते हैं। आने और जाने वालों में फर्क यह है कि जहाँ बाहर से लोग प्रायः यहाँ स्थायी या अस्थायी रूप से बसने और बड़े–बड़े काम खोजने आते हैं, वहाँ यहाँ से जाने वालों में थोड़े से को छोड़ सभी चन्द रोज के लिये कली का काम करने या दूसरे साधारण काम के लिये जाते हैं।

जीवनकाल

छोटानागपुर वासियों के जीवनकाल पर विचार करने से मालूम होता है कि देश के अन्य उन्नतिशील भागों की अपेक्षा यहाँ के लोग बहुत कम उम्र तक जीते हैं। पिछली जनगणना के अनुसार झारखंड में 60 वर्ष से ऊपर के आदमी हजार में 60 थे। बाल–मृत्यु भी देश के अन्य भागों की अपेक्षा यहाँ अधिक है। ज्यादा हिफाजत करने पर भी लड़कियाँ की अपेक्षा लड़कों की मृत्यु अधिक होती है।

झारखंड में स्त्री–पुरुषों को संख्या में बहुत फर्क नहीं है। यहाँ एक पुरुषों में 993 स्त्रियाँ हैं। आदिवासी परम्परा के अनुकूल यहाँ बाल–विवाह बहुत कम होता है।

धर्म और जातियाँ

प्रति सैकड़ें का हिसाब जोड़ने से छोटानागपुर में हिन्दुओं की संख्या ही अधिक है। मुसलमानों की संख्या कम है। ईसाई धर्म प्रचारकों का अड्डा होने के कारण ईसाई बहुत बड़ी संख्या में हैं। सिक्खों, बौद्धों तथा जैनियों की संख्या मामूली है। कितनी ही आदिम जातियों और दलित जातियों के लोग अपने को अब क्षत्रिय कहने लगे हैं और उन्हीं में मिल–जुल गये हैं या मिलते–जुलते हैं। सभी अवनत जातियाँ अपने को ऊपर उठा रही हैं। उन्नति की ओर बढ़नेवाली प्रायः सभी जातियों का यही हाल है। हिन्दू की प्रमुख जातियों में ब्राह्मण सर्वाधिक हैं। इसके पश्चात क्रम से, राजपूत, कोयरी, दुसाध, ग्वाला, चमार, तेली तथा भूमिहार ब्राह्मण आदि की संख्या है। छः मेय एक आदमी यहाँ हरिजन है। दुसाध, चमार, धोबी, पासी, डोम और भुइयाँ मुख्यतः पलामू एवं हजारीबाग जिलों में हैं। हाड़ी हजारीबाग, धनबाद और सिंहभूम में, बौरी धनबाद में; भोगता हजारीबाग, राँची, पलामू में; पन्न, रजवार राँची में तथा भूमिज धनबाद में हैं। बौरी और रजवार के कुछ लोग ईसाई भी हैं। इसी तरह भोगता, भुइयाँ, भूमिज, पन्ने और तुरी हिन्दू के अलावे ईसाई धर्म और आदिम जाति के भी हैं।

छोटानागपुर आदिम जाति बहुल क्षेत्र है। मुंडा और द्राविड़, इनकी दो मुख्य श्रेणियाँ हैं। इन दो क्षेणियों की 21 मुख्य जातियाँ हैं– संथाल, मुंडा, ओराँव, भुइयाँ, हो, भूमिज, खरिया, खरवार, चेरो, कोरवा, करमाली, बिरहोर, असुर, बिरजिया और सबर इत्यादि। इन जातियों में अधिकांश लोग अपने को हिन्दू बताते हैं। शेष अपने को ईसाई और सरना धर्म का मानने वाले बताते हैं।

खेती और पैदावार

झारखंड जंगलों और पहाड़ों से भरा है। यहाँ की जमीन का सिर्फ एक–चौथाई भाग जोता–बोया जाता है। यह भाग खेती के लिये नहीं, पर खनिज पदार्थ के लिये प्रसिद्ध है।

फसल मुख्यतः तीन प्रकार की होती है–भदई, अगहनी और रबी। सबसे मुख्य रबी फसल है। रबी फसल में मुख्य गेहूँ, जौ, चना, अरहर, तीसीय भदई में धान, मकई, मडुआ आदि। अगहनी में मुख्य धान है। यहाँ दो–तीन फसलवाली जमीन बहुत ही कम है। यहाँ जोत के अन्दर आयी हुई जमीन में बहुत–सी जमीन ऐसी है जो दो साल, तीन साल और चार साल परती रहने के बाद बोने के काबिल होती है। यहाँ गेहूँ बहुत थोड़ा होता है। मडुआ की खेती बहुत होती है। धनबाद और हजारीबाग जिलों में बाजरा उपजाया जाता है। तेलहन में तीसी, तिल और सुरगुजा मुख्य है। रूई की खेती दुमका, राँची, धनबाद, हजारीबाग तथा पलामू जिलों में होती है। आदिम जाति के लोग अपने यहाँ की रूई से अपने यहाँ के बने कपड़े अधिक पसन्द करते हैं। मसाले की खेती पलामू में होती है। मसाले में सबसे अधिक मिर्च होती है। चाय की उपज राँची जिले में होती है। झारखंड में सिंचाई की व्यवस्था लगभग नहीं के बराबर है। धनबाद, पलामू और सिंहभूम जिलों में थोड़ी–बहुत सिंचाई का इन्तजाम है।

लोहा तथा कोयला आदि खनिज पदार्थ काफी तौर से पाये जाने के कारण उद्योग–धंधे के बढ़ने में काफी सुविधा हुई है। इंजीनियरिंग, लाह, बिजली, सिमेंट, लोहा, अबरख, ताम्बा आदि से संबद्ध अनेक कारखाने हैं। लाह उद्योग में हजारों लोग लगे हुए हैं। सिंहभूम तसर–व्यापार का केंद्र है। टाटा आयरन और स्टील कम्पनी की स्थापना 1907 में हुई थी। किन्तु अब तो बोकारों में भी लोहा और इस्पात का बहुत बड़ा कारखाना खुल गया है। कत्था हजारीबाग और पलामू में तैयार किया जाता है।

झारखंड से पार होने वाली प्रमुख रेलवे लाइन ग्रैंड कार्ड लाइन है। झरिया–धनबाद के कोयला क्षेत्र में कई छोटी–छोटी लाइनें इधर–उधर फैली हुई हैं। ग्रैंड कार्ड लाइन के गोमोह स्टेशन से बरकाकाना लूप लाइन लातेहार, डालटेनगंज होती हुई सोन–ईस्ट बैंक से मिली है। इसकी लम्बाई 400 कि० मीटर है। राँची से लोहरदगा तक एक छोटी लाइन है। कोलकाता से लाइन मुम्बई को जाती है। वह सिंहभूम जिले के चकुलिया स्टेशन के पास झारखंड में घुसती है और सरायकेला के पास झारखंड से बाहर चली जाती है। टाटानगर से एक लाइन दक्षिण की ओर बादाम पहाड़ को गयी है, जो आरम्भ में करीब 39 किलोमीटर झारखंड के अन्दर है। खरसावाँ से भी एक लाइन दक्षिण को ओर गुआ तक गयी है, जिसकी दूरी 100 किलोमीटर है। आसनसोल के दक्षिण–पश्चिम की ओर आनेवाली लाइन चांडिल होकर सीनी जंक्शन तथा राँची होती हुई राउरकेला तक चली गयी है। झारखंड में सड़कें कम हैं, पर यहाँ सड़कों की दशा अच्छी है। सड़कों में सबसे बड़ी और प्रसिद्ध ग्रैंड ट्रंक रोड झारखंड में धनबाद में प्रवेश कर शेरघाटी में झारखंड से बाहर हो जाती है। प्रमुख स्थानों को जोड़नेवाली झारखंड में और कस्बों में प्रायः सभी प्रकार की आधुनिक सवारी–गाड़ियाँ थीं लेकिन अब शहरों और कस्बों में प्रायः सभी प्रकार की आधुनिक सवारी–गाड़ियाँ चलने लगी हैं। लम्बी यात्रा के लिये अच्छी सड़कों पर बसें चलती हैं। जहाँ रेलवे लाइनें कम हैं, बर्से अधिक चलती हैं। कहीं–कहीं रेलगाड़ियों की प्रतिद्वंद्विता में भी बसें चलायी जाती हैं। राँची जैसे नगरों में अब इंडियन एयर लाइंस की सेवा भी उपलब्ध है।

शिक्षा के क्षेत्र में झारखंड पिछड़ा हुआ इलाका है, किन्तु फिर भी बिहार की तुलना से काफी आगे है। धार्मिक सम्प्रदाय के हिसाब से ईसाइयों में शिक्षा–प्रचार सबसे अधिक है। 5 वर्ष से अधिक उम्र वाले हजार ईसाइयों में 360 ईसाई पढ़े–लिखे हैं। इनमें स्त्री–शिक्षा भी औरों की अपेक्षा बहुत अधिक है और अंग्रेजी पढ़े–लिखे स्त्री–पुरुष भी बहुत हैं। आदिम जातियों में हजार में 260 आदमी पढ़े–लिखे हैं। शिक्षा–प्रचार के लिये झारखंड में चार विश्वविद्यालय हैं। विश्वविद्यालयों से हर साल हजारों विद्यार्थी भिन्न–भिन्न परीक्षाओं उत्तीर्ण होते हैं।

झारखंड में उच्च, माध्यमिक और प्राइमरी विद्यालय की संख्या भी पर्याप्त है। इनमें करीब–करीब आधे स्कूल ईसाई मिशनरियों द्वारा

चलाये जाते हैं। मिशनरियों ने स्त्री–शिक्षा का बहुत प्रचार किया है।

झारखंड से समय–समय पर कई अंग्रेजी, हिन्दी, नागपुरिया और उर्दू की पत्र–पत्रिकाएँ निकलती रही हैं। इस समय राँची से 'राँची एक्सप्रेस', 'आज', 'प्रभात खबर', नामक अखबार निकल रहे हैं। ईसाई मिशनरियाँ अंग्रेजी में पैम्पप्लेट की तरह छोटी–छोटी मासिक पत्रिकाएँ निकालती हैं जिनमें 'एपोस्टल्स', 'लाइट ऑफ ईस्ट' प्रमुख हैं। राँची से 'आदिवासी', 'झारखंड', 'सत्संग', 'निष्कलंक' और 'घरबन्धु' नामक मासिक पत्रिकाएँ भी निकलती हैं।

झारखंड में पढ़ें–लिखे लोगों की मुख्य भाषा हिन्दी है। संथाल परगना में प्रायः 12 प्रतिशत लोग बंगला बोलते हैं। शुद्ध मगही हजारीबाग जिले के उत्तरी भाग और पलामू जिले के पूर्वी भाग में बोली जाती है। पूर्वी मगही हजारीबाग, राँची, धनबाद और सिंहभूम के कुछ हिस्सों में बोली जाती है। राँची की पूर्वी मगही का एक रूप पंच–परगनियाँ है, जो सिल्ली, बरंडा, राहे, बुंडू ओर तमाड़ परगनों में बोली जाती है। तमाड़ में खासतौर से बोले जाने के कारण उसे तमाड़िया भी कहते हैं। धनबाद की पूर्वी मगही पर बंगला का खासा प्रभाव पड़ा है। इसे खासकर कुर्मी जाति के लोग बोलते हैं। ये कुर्मी द्राविड़ हैं। इस बोली को कुरमाली थार, खोरठा, खता या खताही भी कहते हैं। यह धनबाद में बंगला लिपि में लिखी जाती है। इसमें कुछ लोगों को भ्रम हो जाता है कि यह बंगला की ही एक बोली है। यही हालत हजारीबाग की मगही की भी है। सिंहभूम में कुछ लोग शुद्ध मगही भी बोलते हैं। झारखंड में भिन्न–भिन्न आदिम जातियों की बोलियाँ भी बोली जाती है।

झारखंड में भी कुछ भोजपुरी बोलनेवाले लोग हैं, मगर यहाँ को भोजपुरी का रूप बहुत विकृत है। शुद्ध भोजपुरी पलामू जिले के कुछ हिस्सों में बोली जाती है। पलामू को खरबार जाति द्वारा बोली जानेवाली भोजपुरी खरवारी कही जाती है। नागपुरिया छोटानागपुर ही खास भाषा है। इसे मगही, भोजपुरी अथवा छत्तीसगढ़ी कहना गलत है यद्यपिइ स पर तीनों का प्रभाव है। इसमें आदिम जाति भाषाओं के शब्द भी हैं। इसे सदानी या सदरी भी कहा जाता है। मुंडा लोग इसे दिक्कु–काजी अर्थात् शदिक्कुओं की भाषाश, भी कहते हैं।

मुंडा–भाषा–श्रेणी की 15 बोलियाँ झारखंड में प्रचलित हैं। इनमें संथाली, मुंडारी, हो, खरिया, भूमिज, माहिली, कोरवा, कारमाली, असुरी, तुरी, बिरजिया तथा बिरहोरी प्रमुख हैं। द्राविड़–भाषा–श्रेणी की कुल 4 बोलियाँ झारखंड में बोली जाती हैं जिनमें ओराँव या कुडूख प्रमुख है।

झारखंड राज्य में पाँ प्रमंडल हैं–

1. राँची
2. हजारीबाग
3. संथालपरगना
4. पलामू
5. सिंहभूम

कुल 23 जिले हैं– राँची, गुमला, सिमडेगा, लोहरदगा, हजारीबाग, चतरा, कोडरमा, गिरिडीह, बोकारो, धनबाद, दुमका, जामताड़ा, गोड्डा, साहेबगंज, पाकुड़, देवघर, पलामू, लातेहार, गढ़वा, पूर्वी सिंहभूम, पश्चिमी सिंहभूम, सरायकेला, सरसाँवा।

नामकरण

झारखंड का वह क्षेत्र जो आज छोटानागपुर के नाम से जाना जाता है, प्राचीन संस्कृत साहित्य, प्रारंभिक विदेशी यात्रियों के वर्णनों और मध्यकालीन फारसी इतिहास–ग्रंथों में विभिन्न नामों से चर्चित हुआ है। यूनानी लेखक प्लिनी ने लिखा है कि 'पाटलिबोथ्रिस' (पाटलिपुत्र) से सुदूर दक्षिण में 'मोनेडेस' और सुआरी कहे जाने वाले लोग रहते थे। ये लोग संभवतः आधुनिक मुंडा और प्राचीन शबर जाति के लोग ही थे। एक अन्य लेखक टालमो ने भी उपर्युक्त लोगों का 'मुडाला' और 'सुत्ररराई' नाम से उल्लेख किया है। उसी तरह ह्वेनसांग द्वारा उल्लिखित 'कि–लो–ना–सु–फा–ला–ना' अथवा 'कर्णसुवर्ण' भी छोटानागपुर को अधित्यका को ही. इंगित करता है। वेनसांग से भी पहले फाहियान ने इस पहाड़ी इलाके का उल्लेख श्कुक्कुट–लाडश के नाम से किया है।

निष्कर्ष

वैदिक साहित्य में झारखंड का कोई उल्लेख नहीं है। किन्तु महाभारत के 'दिगिविजय–पर्व' में इस क्षेत्र का 'पुंडरिकदेश' के नाम से उल्लेख हुआ है। महाभारत की 'पशुभूमि' भी संभवतः झारखंड ही है, क्योंकि 'पशुभूमि' इस प्रदेश का वह भाग था जिसका नामकरण जंगली जानवरों के बाहुल्य के कारण हुआ था। बौद्ध एवं जैन साहित्य में इस क्षेत्र का नाममात्र का ही उल्लेख है। फिर भी 'इंडिया एण्ड जम्बू आइलैंड' के लेखक अमरनाथ दास ने झारखंड का संबंध गौतम बुद्ध तथा महावीर से जोड़ने का प्रयास किया है। शरतचन्द्र राय का कहना है कि झारखंड के अनेक स्थानों के नाम के साथ 'भूम' प्रत्यक्ष जुड़ा हुआ जान पड़ता है, जैसे मानभूम, सिंहभूम, धालभूम, भंजभूम तथ मल्लभूस इत्यादि । 'रसिक मंगल' नामक ग्रंथ में छोटानागपुर 'नागभूम' के नाम से गिनाया गया है। श्री कृष्णराज गुप्त ने 'भूम' शब्द को एक विशेष पहाड़ी संस्कृति का परिचायक हो सकना संभव माना है। किन्तु 'भूम' भूमि शब्द का केवल विकृत रूप जान पड़ता है।

संदर्भ

1. आर० आर० दिवाकर, बिहार शूद एजेज पृ० 27–32 (पटना, 1958)
2. एफ. इमर्न, छोटानागपुर सर्वे (नई दिल्ली, 1969) पृ. 49–50
3. ई. अहमद बिहार– ए फिजीकल, इकोनौमिक ऐंड रिजीनल ज्योग्रफी (राँची, 1965), पेज. 23; जी.पी. अम्बष्ठ, बिहार दर्पण, पटना (1940), पृ.16
4. जी.पी. अम्बष्ठ, वही, पृ. 47–52
5. जी. पी. अम्बष्ट वही, पृष्ठ 52–53
6. जी.पी. अम्बष्ठ, वही, पृष्ट 61–77
7. वही, पृष्ठ 202–5
8. पी.एन. ओझा (सं), छोटानागपुर पोस्ट ऐंड प्रोगेंट (राँची, 1964), पृष्ठ 21–30
9. सर जी.ए. ग्रीयर्सन, लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया, जिल्द 4
10. प्लिनो, हिस्ट्री नेचुरेलिस, 6, सी. 22